OFFICE, PRINCIPAL GOVERNMENT TULSI COLLEGE, ANUPPUR
Affiliated to Awadhesh Pratap Singh University Rewa (MP)
Registered Under Section 2 (F) & 12 (B) of UGC Act

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in ☎9893076404

Belief and Relevance Of Mahatma Gandhiji

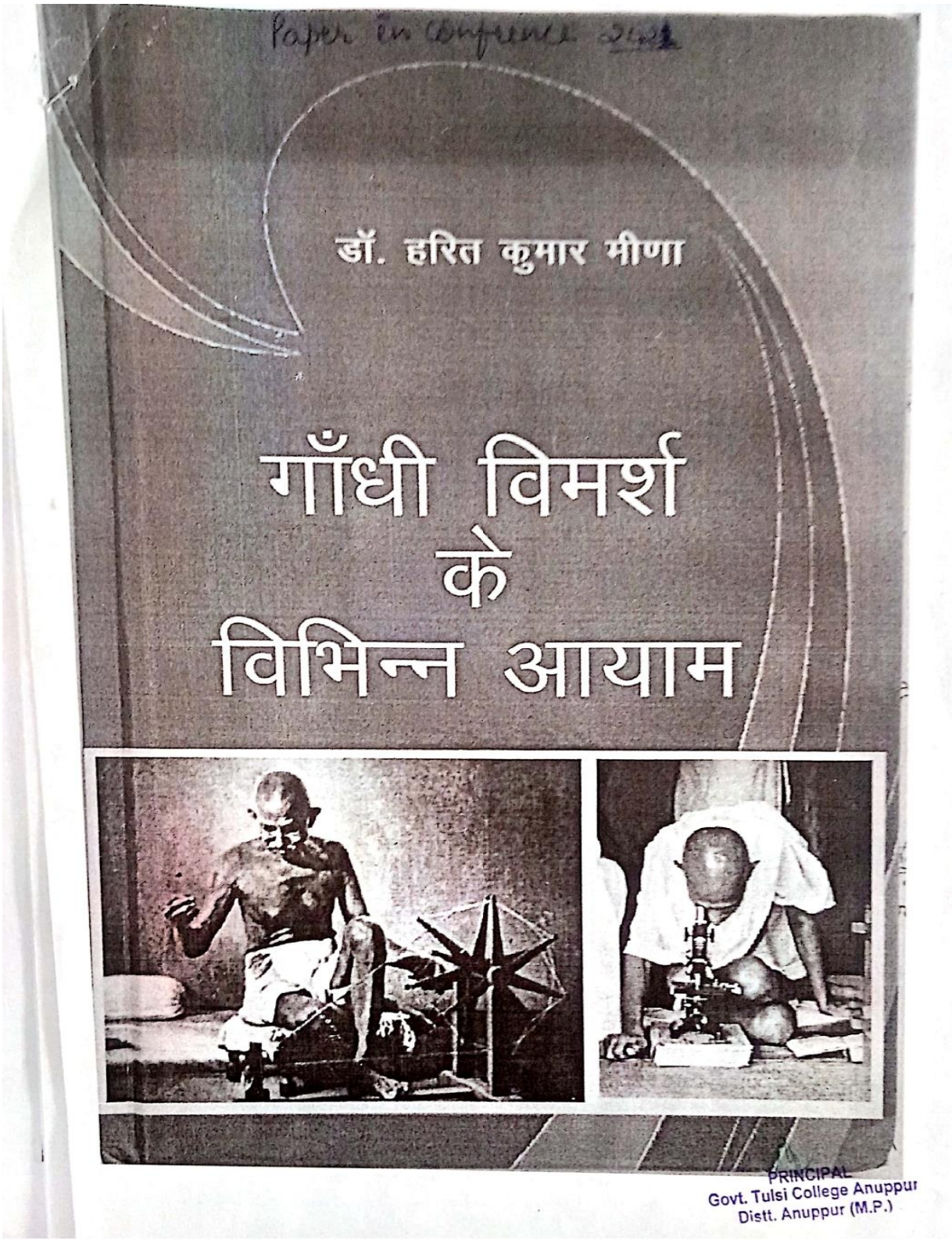

Published by

BEST PUBLISHING HOUSE
5A, 4406/12, Ansari Road
Daryaganj, New Delhi 110002 (India)
Ph: 011-7210090037, 011-65842996
E-mail: bestpublishinghouse@gmail.com

गाँधी विमर्श के विभिन्न आयाम

© संपादक

Rs.595/-

प्रस्तुत प्रकाशन का लक्ष्य ऐसी सूचनाएं उपलब्ध कराना है जो वैध और विश्वसनीय माने जाने वाले स्रोत से जुटाई गई है। यह किसी प्रकार की पेशेवर सलाह देने अथवा विषय विश्लेषण करने का प्रयास नहीं है और न ही इसे इस रूप में देखा जाना चाहिए। इस पुस्तक में निहित सूचनाओं की सत्यता और विश्वसनीयता की हर संभव जांच करने की कोशिश की गई है, लेकिन इसके बावजूद प्रस्तुत प्रकाशन में रह गई किसी प्रकार की असावाधानीवश हुई गलतियों, चूक या त्रुटियों (टंकन या तथ्यात्मक) के कारण होने वाली हानि के लिए प्रकाशक अथवा लेखक उत्तरदायी नहीं है।

पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की पुर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता है।

First Edition: 2021

ISBN: 978-93-8900-134-1

PRINTED IN INDIA

Printed at: New Delhi

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in ☎9893076404

अनुक्रमणिका

पुरोवाक v
प्रस्तावना vii

1. वर्तमान समय में गाँधीवाद की प्रासंगिकता 1
डॉ. संगीता

2. पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छताः गाँधीवादी प्रतिमान 12
डॉ. प्रवेश कुमार एवम दीपिका रानी

3. आन्दोलन बनाम जन आन्दोलन–भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में गाँधीजी का वैचारिक एवं राजनीतिक योगदान 19
डॉ. हरित कुमार मीणा

4. गाँधी और जाति अस्पृश्यता की समाप्तिः एक अवलोकन 31
डॉ. योगेश कुमार

5. स्वराज्य के लिए संघर्ष में गाँधीजी द्वारा नए अस्त्रों का प्रयोगः एक पुनरवालोकन 43
डॉ. अलीमा शहनाज सिद्धीकी

6. भारतीय स्वाधीनता संघर्ष एवं महात्मा गाँधीः विचार, रणनीतियां एवं क्रियान्वयन 47
डॉ. संकेत कुमार चौकसे

7. गाँधी दर्शनः अवधारणा एवं प्रासंगिकता 56
डॉ. बिंदिया महोबिया

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anupp
Distt. Anuppur (M.P.)

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in ☎9893076404

8. गाँधीजी का स्वप्न रामराज्य एवंम उसकी वर्तमान प्रासंगिकता 67
अभिषेक अग्रवाल एवम डॉ. श्रद्धा गर्ग

9. महात्मा गाँधीजी की मान्यताएं एवं प्रासंगिकता 76
कमलेश चांवले

10. धर्म और साम्प्रदायिकता: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महात्मा गाँधी के विचारो की प्रासंगिकता 83
शैल्जा

11. मोहनदास करमचन्द गाँधी और डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का सामाजिक न्याय: एक तुलनात्मक अध्ययन 88
सजय कुमार

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in 9893076404

9

महात्मा गाँधीजी की मान्यताएं एवं प्रासंगिकता

कमलेश चांवले

गाँधीजी को भारत का राष्ट्रपिता कहा जाता है, क्योकि राष्ट्रीय जीवन जैसा कि वह आज है, को बनाने में या कम से कम दिशा निर्धारण में गाँधीजी का जितना योगदान है उतना किसी का नही है। उन्होने भारतीय जनता तथा समाज के निम्नतम स्तर तक उतरकर और उनके साथ घुलमिलकर उनकी समस्याओ, भावनाओ तथा वास्तविकताओ को पहचानने की कोशिश की और उसी के आधार पर अपने विचारो को प्रस्तुत किया।

उनका सार्वजनिक जीवन एक राजनीतिज्ञ के रूप मे आरंभ हुआ था, पर राजनीति को उन्होने कभी गन्दी या असत्य पर आधारित चीज नही माना और इसीलिए समस्त परंपराओ को तोडते हुए राजनीति में भी नैतिक तत्वो को सम्मिलित किया। इस द्रष्टिकोण से गाँधीजी केवल राजनीतिज्ञ ही नही बल्कि आदर्शवादी भी थे। पर वे आदर्शवाद के पीछे बिना किसी आधार के दौडने के पक्ष में भी नही थे। उनका विष्वास था कि आदर्शों की पूर्ति वास्तविक रचनात्मक कार्यक्रम के द्वारा ही की जानी चाहिए, वे व्यवहारिकता को बनाए रखने के लिए परिस्थितियां बदलने पर अपने विचारो को भी बदलते थे, इस तरह वे रूढिवादी न होकर यथार्थवादी भी थे। वे धनी और गरीब के बीच की खाई को पाटना चाहते थे और इसके लिए उन्होने अनेक आर्थिक कार्यक्रमो को प्रस्तुत किया, इस द्रष्टिकोण से उन्हे एक अर्थशास्त्री भी कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त भारतीय समाज में फैली हुई कुरीतियो जैसे अस्पृश्यता, देवदाशी प्रथा, विधवा विवाह पर रोक, दहेज, वेश्याव्रत्ति, नशाखोरी आदि को धीरज व परिश्रम से उखाड फेंकने की दिशा में गाँधीजी का योगदान वास्तव में अनूठा है। इस द्रष्टि से गाँधीजी एक समाज सुधारक भी थे।

गाँधीजी ने अपने विचारो को अपने जीवन के सामान्य अनुभव और उच्चकोटी के बौद्धिक चिन्तन पर प्रस्तुत किया है, कि किसी सिद्धांत के आधार पर। उनका आदर्श, कार्यक्षेत्र तथा

सहायक प्राध्यापक, राजनीति शास्त्र विभाग, शासकीय तुलसी महाविद्यालय, अनूपपुर, मध्य प्रदेश

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in 9893076404

मूल्यांकन पद्धति स्वयं उनकी थी और इसीलिए उनके विचारों को गाँधीवादी विचार कहा जाता है। उनके विचारों का उद्देश्य रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत कर कांग्रेस को आम जनता का संगठन बनना था, जिससे आजादी की लड़ाई में आम जनता की निर्णायक भागीदारी प्रारम्भ हुई थी। गाँधीजी ने कभी दिल्ली जाकर अंग्रेजो भारत छोड़ो का नारा नहीं दिया था, उन्होंने जनता जहां थी, वहीं पर अपने रचनात्मक कार्यक्रमों के द्वारा लोगों की संगठित शक्ति खड़ी की थी।

1922 में चौरा चौरी हादसे के बाद असहयोग आन्दोलन को बंद करने और जेल से बाहर आने पर उन्होंने जनआन्दोलन को जड़ से तैयार करने की कोशिश शुरू का थी। इस दौरान उन्होंने खादी आन्दोलन शुरू करने, अस्पृश्यता से छुटकारा पाने और साम्प्रदायिक सदभाव को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

1928 में बारदोली सत्याग्रह में सरदार पटेल साथ ही 1930 में गांधीजी ने दाण्डी मार्च सहित सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया। उधर तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू के नेतत्व में कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की, इसरो पूरे देश में एक विशाल जनआंदोलन शुरू हो गया। 1930 से 1932 के बीच गोलमेज सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए गाँधीजी लंदन गए और वहां आजादी के पक्षमें अपने मजबूत तर्कों से पूरी दुनिया का दिल जीत लिया। इसके बाद गाँधीजी ने गाँव गाँव जाकर लोगो को जागरूक करना जारी रखा। 1942 में गाँधीजी ने भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू कर दिया, जिसने अंग्रेजी हुकूमत की जड़ें हिला कर रख दी। इस तरह गाँधीजी ने स्वतंत्रता आन्दोलन को एक जन आन्दोलन में तब्दील कर दिया। उन्होंने छोटे छोटे शहरो और गांवों में आजादी की लड़ाई के प्रसार पर ध्यान क्रेंद्रित किया और स्वतंत्रता को आम इंसान की जरूरत बना दिया।

अतः ये कहा जा सकता है कि बिना गाँधीजी के आजादी का आन्दोलन और स्वतंत्रता की अवधारणा संभ्रान्त वर्ग के लिए बहस के मुददे से ज्यादा कुछ नहीं रह जाती। महात्मा गाँधी बड़े जननेता तो थे ही लेकिन उनकी जीवन दृष्टि भी काफी महान थी। बात चाहे अहिंसक आन्दोलन की हो या फिर ग्रमजीवन की। उनके पास सामाजिक नब्ज को पकड़ने वाला मौलिक नजरिया था। तीन बातो नर उन्होंने काफी जोर दिया– ग्राममोद्योग, स्वच्छता और ग्राम स्वराज।

ग्रामोद्योग

ग्रामोद्योग पर बात करते समय गाँधीजी पर्यावरण के लिए भी फिक्रमंद थे। उनका मानना था कि खेती–किसानी से लेकर जो भी छोटे उद्योग लगे, उससे प्रदूषण कम हो और गांव साफ सुथरा रहे। गाँधीजी की अगुआई में जब पूरा देश आजादी की लड़ाई में जुटा था तो गाँधीजी उस वक्त कई मोर्चो पर संघर्ष कर रहे थे। अंग्रेजो के यकीन को तो उन्होंने चूर–चूर कर दिया लेकिन आजाद भारत की तस्वीर कैसी होगी और ये किस दिशा में आगे बढ़ेगा,

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in 9893076404

गाँधीजी इस पर भी मनन करते रहे। उन्हे मालूम था कि देश की बहुसंख्यक आबादी गांवो मे बसती है और गांव के विकास के बगैर भारत की मजबूत नींव मुमकिन नही। महात्मा गाँधी ने देश के कोने–कोने का दौरा किया और महसूस किया कि गांवो को आत्मनिर्भर बनाना बेहद जरूरी है।

गाँधीजी के जो विचार है या उनके जो सिद्धान्त है वो एक सामान्य आदमी के जीने के सिद्धान्त है। यही गाँधीजी की विशेषता है कि उन्होने जीवन और सिद्धांत की दूरी समाप्त कर दी। आप जब भी कोई अच्छी बात करते है, जब भी आप सफाई से रहते है, जब भी आप दूसरो की सुनते है, जब भी आप दूसरो की मदद करते है तो सब कुछ गाँधीजी से जुडे रहते है।

महात्मा गाँधीजी ने अंग्रेजो के खौफनाक शासन के दौर में महसूस किया कि शक्ति का विकेन्द्रिकरण बेहद जरूरी है। अगर छोटे–छोटे गांवो को शासन का अधिकार मिले, तो स्थानीय जरूरतो के हिसाब से वो आगे बढ सकते है। गाँधीजी का ग्राम स्वराज ये कहता है कि हर एक गांव पडोसी से अपनी जरूरतो और इच्छा के मुताबिक पूरी तरह स्वाधीन होगा, लेकिन जिन जरूरतो के लिए परस्पर सहयोग की दरकार है वहां आपस में एक–दूसरे पर निर्भर भी होंगे। गाँधीजी का मानना था कि भोजन, कपडा, साफ पानी, स्वच्छता, आवास और शिक्षा जैसे बुनियादी मुददो पर बेहतर काम हो पाऐगा। इसीलिए गाँधीजी चाहते थे कि मनुष्य की बुनियादी जरूरते जहां वह रहता है, वही वो उसका उत्पादन करें, उसकी खपत हो और जैसे–जैसे विस्तार हो, प्रकृति को या अपने से कमजोर का दोहन कर या दबाकर विकास का रास्ता नही अपनाया जाए। एक–दूसरे के पूरक होकर व सहयोगी बनकर के विकास का नया रास्ता बनाया जाए।

ग्राम स्वराज्य

ग्राम स्वराज्य के मामले पर कांग्रेस के कई आला नेता गाँधीजी से पूरी तरह एहसानमद थे। जवाहरलाल नेहरू आधुनिक राष्ट्र राज्य और केन्द्रीकृत शक्ति के पक्ष मे थे, वे बडे उद्योगो और संस्थाओ के हिमायती थे। लेकिन गाँधीजी का मानना था कि देश को एक चश्मे से नही देखा जा सकता और हर गांव की अलग और अनूठी जरूरत हो सकती है। महात्मा गाँधीजी के मुताबिक स्वराज्य का मतलब सरकारी नियंत्रण से मुक्ति है, चाहे वो विदेशी सरकार हो या राष्ट्रीय सरकार से। गाँधीजी के अनुसार ग्राम स्वराज्य में किसी भी तरह के भेदभाव और उंच–नीच के लिए कोई जगह नही है। उनके अनुसार पूर्ण स्वराज्य तक पहुचने के बाद राजा और किसान के बीच, हिन्दू और मुसलमानो के बीच, अलग–अलग जातियो के बीच कोई विभेद नही होगा। उनके मुताबिक उनका स्वराज्य गरीबो का स्वराज्य होगा। जहां सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक आधार पर पीछे छूट चुकी आबादी को तवज्जो दी जाएगी।

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in 9893076404

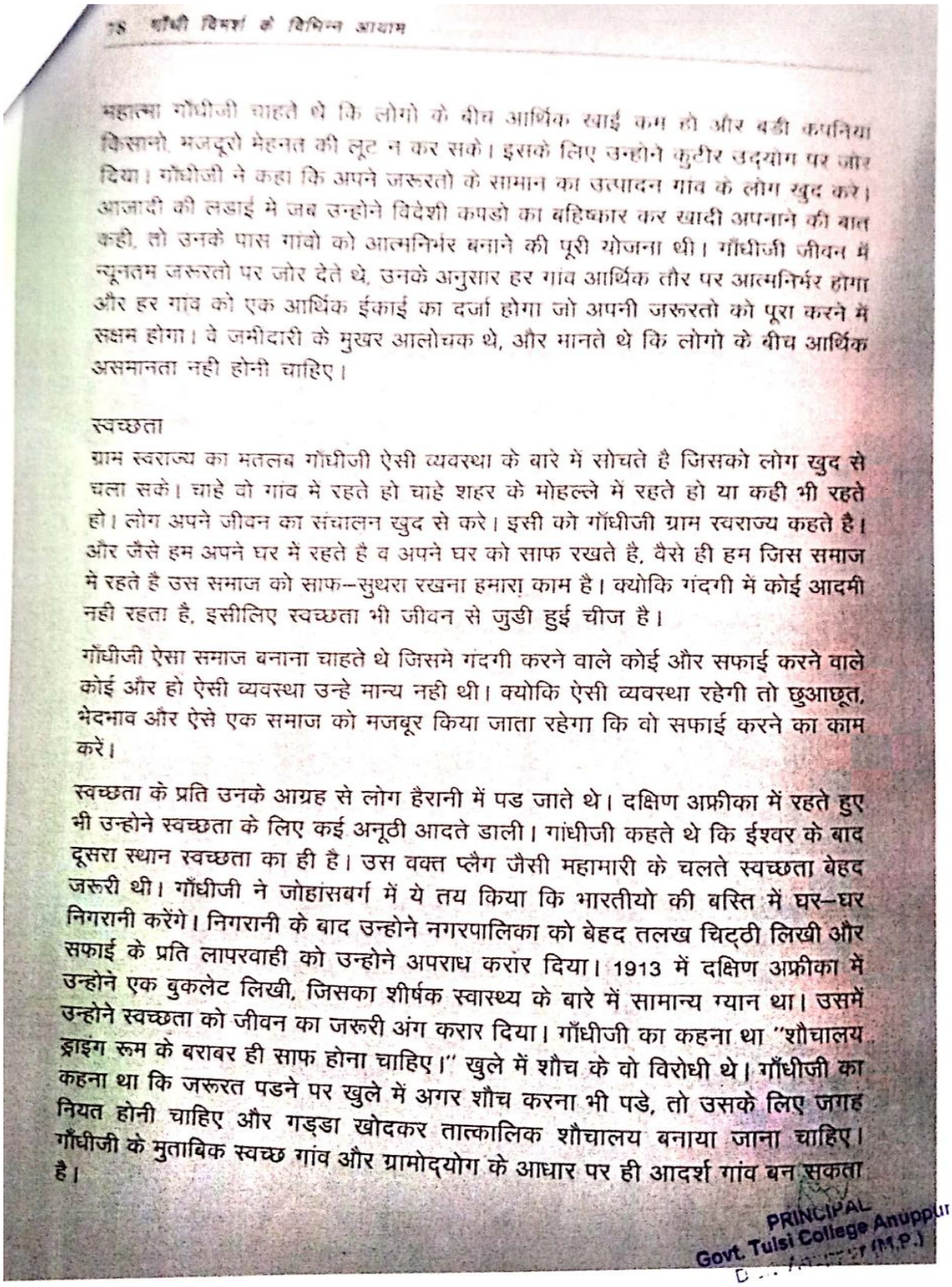

78 गाँधी विमर्श के विभिन्न आयाम

महात्मा गाँधीजी चाहते थे कि लोगो के बीच आर्थिक खाई कम हो और बडी कंपनिया किसानो, मजदूरो मेहनत की लूट न कर सके। इसके लिए उन्होने कुटीर उद्योग पर जोर दिया। गाँधीजी ने कहा कि अपने जरूरतो के सामान का उत्पादन गाव के लोग खुद करे। आजादी की लडाई मे जब उन्होने विदेशी कपडो का बहिष्कार कर खादी अपनाने की बात कही, तो उनके पास गांवो को आत्मनिर्भर बनाने की पूरी योजना थी। गाँधीजी जीवन में न्यूनतम जरूरतो पर जोर देते थे, उनके अनुसार हर गाव आर्थिक तौर पर आत्मनिर्भर होगा और हर गाव को एक आर्थिक ईकाई का दर्जा होगा जो अपनी जरूरतो को पूरा करने में सक्षम होगा। वे जमीदारी के मुखर आलोचक थे, और मानते थे कि लोगो के बीच आर्थिक असमानता नही होनी चाहिए।

स्वच्छता

ग्राम स्वराज्य का मतलब गाँधीजी ऐसी व्यवस्था के बारे में सोचते है जिसको लोग खुद से चला सके। चाहे वो गाव मे रहते हो चाहे शहर के मोहल्ले में रहते हो या कही भी रहते हो। लोग अपने जीवन का संचालन खुद से करे। इसी को गाँधीजी ग्राम स्वराज्य कहते है। और जैसे हम अपने घर में रहते है व अपने घर को साफ रखते है, वैसे ही हम जिस समाज मे रहते है उस समाज को साफ–सुथरा रखना हमारा काम है। क्योकि गंदगी में कोई आदमी नही रहता है, इसीलिए स्वच्छता भी जीवन से जुडी हुई चीज है।

गाँधीजी ऐसा समाज बनाना चाहते थे जिसमे गंदगी करने वाले कोई और सफाई करने वाले कोई और हो ऐसी व्यवस्था उन्हे मान्य नही थी। क्योकि ऐसी व्यवस्था रहेगी तो छुआछूत, भेदभाव और ऐसे एक समाज को मजबूर किया जाता रहेगा कि वो सफाई करने का काम करें।

स्वच्छता के प्रति उनके आग्रह से लोग हैरानी में पड जाते थे। दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए भी उन्होने स्वच्छता के लिए कई अनूठी आदते डाली। गांधीजी कहते थे कि ईश्वर के बाद दूसरा स्थान स्वच्छता का ही है। उस वक्त प्लैग जैसी महामारी के चलते स्वच्छता बेहद जरूरी थी। गाँधीजी ने जोहांसबर्ग में ये तय किया कि भारतीयो की बस्ति में घर–घर निगरानी करेंगे। निगरानी के बाद उन्होने नगरपालिका को बेहद तलख चिट्ठी लिखी और सफाई के प्रति लापरवाही को उन्होने अपराध करार दिया। 1913 में दक्षिण अफ्रीका में उन्होने एक बुकलेट लिखी, जिसका शीर्षक स्वास्थ्य के बारे में सामान्य ग्यान था। उसमें उन्होने स्वच्छता को जीवन का जरूरी अंग करार दिया। गाँधीजी का कहना था "शौचालय ड्राइंग रूम के बराबर ही साफ होना चाहिए।" खुले में शौच के वो विरोधी थे। गाँधीजी का कहना था कि जरूरत पडने पर खुले में अगर शौच करना भी पडे, तो उसके लिए जगह नियत होनी चाहिए और गड्डा खोदकर तात्कालिक शौचालय बनाया जाना चाहिए। गाँधीजी के मुताबिक स्वच्छ गांव और ग्रामोद्योग के आधार पर ही आदर्श गांव बन सकता है।

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur (M.P.)

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in 9893076404

धर्म

गाँधीजी और धर्म को लेकर कई भ्रान्तियां है। मानवतावादी चेहरे और सभी धर्मों का सम्मान करने के चलते, गाँधीजी को कई लोग अधार्मिक मानने की भूल करते है। और कुछ उन्हे कट्टर धार्मिक भी मानने लगते है जबकि ऐसा बिलकुल नही है। गाँधीजी का धर्म क्या है, ये अपने आप में बडा दिलचस्प सवाल है। हिन्दुओ का एक तबका उन्हे सच्चा हिन्दू मानने को तैयार नही होता, क्योकि गाँधीजी अक्सर दूसरे धर्मो की बात भी करते दिखते है। धर्म परिवर्तन के मुद्दे पर उस जमाने के ईसाई गाँधीजी को कट्टर हिन्दू मानते रहे जबकि मुस्लमानो के एक तबके में गाँधीजी मौका परस्त कहलाते रहे। जबकि गाँधीजी ने अपने धर्म को लेकर कभी भी किसी को भ्रम में नही रखा। उन्होने कहा कि वो सनातनी हिन्दू है और उन्होने लोगो को ये भी बताया कि वो हिन्दू क्यो है। गाँधीजी ने कहा कि वो सनातनी हिन्दू है। सनातनी हिन्दू यानि जो सत्य की बुनियादी उसूलो पर विश्वास रखता हो, उसकी प्रैक्टिस करता हो और फिर ये कहा कि मैं चूंकि सच्चा हिन्दू हूं, इसीलिए सच्चा मुसलमान भी हूं, सच्चा क्रिस्चियन भी हूं।

बतौर हिन्दू गाँधीजी ने धर्म की अपनी व्याख्या देकर बताया कि उनका धर्म किस तरह का है उन्होने लिखा है कि वो अपने आप को सनातनी हिन्दू कहते है क्योकि उनका विश्वास वेद, उपनिषद और पुराणो में है। क्योकि वो अवतार और पुर्नजन्म में यकीन रखते है। वो वर्णाश्रम धर्म के वैदिक स्वरूप का पालन करते है हालांकि विकृति के तौर पर फैली जाति व्यवस्था में उनका यकीन नही था। मूर्ति उनके भीतर संवेदनाएं नही जगाती लेकिन वो मूर्तिपूजा के विरोधी नही थे। गौरक्षा का उनका नजरिया आम लोगो से अलग था वो कहते थे कि उनके लिए मानव जीवन का मूल्य गाय से ज्यादा है, जैसे गाय उपयोगी है वैसे ही मनुष्य भी। फिर चाहे वो हिन्दू हो या मुसलमान।

हर धर्म के बुनियादी तत्वो के साथ उन्की पूरी आस्था थी। उनका हिन्दू धर्म किसी भी धर्म के विरुद्ध खडा नही होता था। गाँधीजी शायद दुनिया के एकमात्र ऐसे व्यक्ति व विचारक है, जिसने कहा कि मैं एक अच्छा हिन्दू हूं इसीलिए मैं एक अच्छा क्रिस्चन हूं, मै एक अच्छा मुस्लमान हूं और मै एक अच्छा पारसी भी हूं। एक धर्म का अगर ईमानदारी से पालन करेंगें तो दुनिया के सारे धर्मो का पालन करने लगेंगें। इसीलिए गाँधीजी ने धर्मो की वो दीवार तोड दी जिन दीवारो को बनाके हम एक–दूसरे से लडते रहते है। इसीलिए गाँधीजी का धर्म कुछ अलग है, उसे उन्ही की नजरिए से हमें समझना पडेगा।

गाँधीजी हमेशा धार्मिक संकीर्णता के खिलाफ रहे, उन्होने धर्म के नाम पर हिंसा का हमेशा विरोध किया। उन्होने धर्म को आत्मबल और आत्मसंयम का अस्त्र बताया। गाँधीजी को पढें तो वे धर्म के आध्यात्मिक रवरूप पर जोर देते नजर आते है। एक बार उन्होने कहा था कि वो रामराज्य लाना चाहते है लेकिन उनका रामराज्य धार्मिक नही बल्कि आदर्शवादी राज्य होगा। उन्होने बताया कि रामराज्य एक आदर्शराज्य की कल्पना है और वो उस सर्वमान्य

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Dist...

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in 9893076404

कल्पना को छूना चाहते है। इस आदर्शवादी राज्य में सबको समानता हासिल होगी और किसी को किसी का डर नही होगा। ये राज्य आत्मनिर्भर होगा और किसी भी नागरिक को कोई कष्ट नही होगा।

गाँधीजी ने कहा कि हिन्दू परिवार में जन्म लेने और आनुवांशिक असर के चलते वो हमेशा हिन्दू रहे, अगर हिन्दू धर्म असहिष्णु होता और उनके नैतिक मूल्यो व आध्यात्मिक विकास के मार्ग में बाधक बनता तो वे हिन्दू धर्म का भी विरोध करते। उन्होने कहा कि अहिन्सा सभी धर्मो का सार है। वैसे वो सभी धर्मो 'एकात्म' अर्थात एक होने में यकीन रखते थे। उनके अनुसार अन्य धर्मो के ग्रंथो को भी उतना ही देना चाहिए, जितना वेद और पुराण को । गाँधीजी ने अहिसा, सत्य, और ब्रम्हचर्य को महत्व दिया, किन्तु मानवता उनके लिए सर्वोपरी थी साथ ही उन्होने जीवन मूल्यो, आदर्शो और आध्यात्म को भी धर्म से अलग नही माना।

प्रासंगिकता

दुनिया भर में जारी हिंसा, मतभेद, बेरोजगारी, मंहगाई और तनावपूर्ण माहौल में आज बार–बार एक सवाल उठ रहा है कि गाँधीजी के सत्य और अहिंसा पर आधारित दर्शन और विचारो की आज कितनी और क्या प्रासंगिकता है। गाँधीजी के जीवन को पढने पर हम पाते है कि उनके विचार और जीवन न सिर्फ उस दौर के लिए बल्कि मौजूदा और आने वाले दौर के लिए भी प्रासंगिक है और रहेगा।

महात्मा गाँधी एक तरफ देश को आजाद कराने की जद्दोजहद में जुटे हुए थे तो दूसरी तरफ उनके मन में अपने किस्म का एक भारत आकार ले रहा था। जिस अंत्योदय की अवधारणा पर आज सारी सरकारे अपनी नीतियां बनाने का दावा करती है, उस अंत्योदय ने पहली बार शायद महात्मा गाँधी के विचारो में ही जन्म लिया। गाँधीजी का भारत गांवो में बसता था इसीलिए वो ग्रम स्वराज्य की बात मरते दम तक करते रहे। गाँधीजी के भगवान गरीबो में निवास करते थे, इसीलिए उन्होने दरिद्र नारायण जैसे शब्द गढें। दलितो को वे हरि का जन कहते थे। गांव, गरीब और ग्रामीण गाँधीजी के विचारो के केन्द्र में थे और आजादी के 70 साल बाद भी ये सभी सरकारी योजनाओ का आधार है।

गाँधीजी की सबसे बडी प्रासंगिकता और उनकी जरूरत को हम आज के दौर में स्वच्छता के प्रयासो से समझ सकते है। गाँधीजी ने समाजशास्त्र को समझते हुए स्वच्छता के महत्व को समझा। अपने दक्षिण आफ्रीका के दिनो से लेकर भारत तक के अपने पूरे जीवन काल में बिना थके वो स्वच्छता के प्रति लोगो को जागरूक करते रहे। इसके साथ ही उन्होने पारंपरिक दौर पर सदियो से सफाई के काम में लगे लोगो को गरिमा प्रदान करने की कोशिश की। वो खुद का मैला ढोने, खुद को साफ–सुथरा रखने और अपना हर काम खुद करने पर यकीन रखत थे।

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in 9893076404

महात्मा गाँधी ने हमेशा स्वावलबी अर्थात आत्मनिर्भर होने पर जोर दिया। आज के दौर की सरकारे इसी अवधारणा को मूर्तरूप देने का दावा कर रही है। 'आत्मनिर्भर भारत' योजना इसी का उदाहरण है। सामाजिक समरसता और न्याय की बात हो या अहिंसा का सिद्धांत गाँधीजी के ये विचार किसी दौर में अप्रासंगिक नही हो सकते। आज की भागती–दौडती दुनिया में समय की कीमत को गाँधीजी ने दशको पहले समझ लिया था। सत्य पर अटूट आस्था, सेवा की भावना, सामाजिक कुरीतियो के खिलाफ लडाई, लिंग भेद से छुटकारा ये तमाम प्रयोग गाँधीजी ने उस दौर में ही कर लिए थे, जिस दौर में इनसे पार पाना नामूमकिन समझा जाता था। आज के दौर में जब साम्प्रदायिकता बार–बार सिर उठा रही, भाषा, जाति, वर्ग भेद की लकीरे खीच दी जा रही है। ऐसे में गाँधीजी के ये सिद्धांत न सिर्फ प्रासंगिक है, बल्कि उनसे पार पाने का जरिया भी है।

गाँधीजी के सत्य और अहिंसा पर आधारित दर्शन और विचारो की प्रासंगिकता दिनो–दिन बढती जा रही है। ये कहा जा सकता है कि न सिर्फ भारत बल्कि समूची दुनिया के सामने शांति और सद्भाव के लिए गाँधीजी के बताएं रास्ते ही एकमात्र विकल्प रह जाऐगे। मार्टिंग लूथर किंग जूनियर और नेलशन मण्डेला से लेकर दलाई लामा, आंग सांग सू की और बराक ओबामा जैसी शख्सियतो ने गाँधीजी को सम्पूर्ण मानव जाति के उद्धारक के तौर पर देखा है। और आज भी जैसे–जैसे विश्व हिन्सा, आर्थिक मंदी, भूख, बेरोजगारी और नफरतो के जाल में उलझता जा रहा है, वैसे–वैसे दुनिया को न केवल गाँधीजी के दर्शन याद आ रहे है बल्कि गाँधीजी के दर्शन को आत्मसात करने जरूरत भी बडी सिद्दत से महसूस की जाने लगी है।

महात्मा गाँधी के व्यतित्व की सबसे बडी विशेषता ये है कि उन्होने किसी बात को केवल बौद्धिक स्तर पर स्वीकार नही किया वो बेहद प्रयोगधर्मी इंसान थे। हर सिद्धांत के मूल में जाकर उस पर प्रयोग करके ही गाँधीजी उसे दुनिया के सामने रखते थे। यही कारण है कि उन्होने अपने जीवन को ही अपना संदेश बताया। और उनका जीवन हर तरह से हर दौर में प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रमख राजनीतिक विचारक– गोविद प्रसाद शर्मा
आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन –गोविद प्रसाद शर्मा
नीतिशास्त्र,सत्यनिष्ठा एवं मनोवृत्ति– प्रो. किशोर पटेल, मो. युसुफ खान, ओमप्रकाश पाटीदार
योजना मासिक पत्रिका
दैनिक भास्कर एवं बी.बी.सी. न्यूज

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Dist. Anuppur (M.P.)